© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 02 | January – March 2018

गिजूभाई के शिक्षा दर्शन का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव।

डॉ0 मुनेन्द्र कुमार, प्राचार्य शिक्षा विभाग
किशन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर ऐजुकेशन, मेरठ।
(चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ) उत्तर प्रदेश।
ई–मेल drmunendra2013@gmail.com

प्रस्तावना

दार्शनिकों विचारकों और शिक्षाशास्त्रियों ने समय–समय पर समाज व शिक्षा को समुन्नत बनाने के लिए व इसमें सुधार के लिए अपने विचार दिए हैं भारत में स्वतन्त्रता से है, जिससे शिक्षा की स्थिति में वांछित सुधार लाया जा सके और भारत को शत–प्रतिशत शिक्षित किया जा सके, किन्तु शिक्षा परिदृश्य को देखने पर निराशा ही हाथ लगती है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में न तो कोई क्रान्ति हो पाई और न ही शतप्रतिशत सुशिक्षा हो पाई। फलस्वरूप भारत अभी भी विकासशील देशों की श्रेणी में खड़ा हुआ दिखाई देता है। चिंतन करने पर प्रतीत होता है कि समाज व शिक्षा में सुधार के लिए व्यक्त विचारों और सिद्धान्तों की भारतीय परिवेश से अनुकूलता नहीं रही। यह स्थिति देश के लिए अत्यन्त घातक है।

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

इस स्थितियों का अध्ययन–मनन करने पर यह सहज ही समझ में आता है कि भारत की दृष्टि से उपर्युक्त व्यक्ति के निर्माण के लिए शिक्षा व्यवस्था को बदलना होगा। एक ऐसी व्यवस्था लानी होगी जो भारतीय परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप हो। भारतीय परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा सम्बन्धी विचार और शिक्षा प्रणाली किसी भारतीय के द्वारा देना ही सम्भव है। वर्तमान भारत को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने की शिक्षा प्रणाली देने वाला और वर्तमान भारत की कठिनाईयों और समस्याओं को समझने वाला कोईक महान भारतीय व्यक्तित्व ही हो सकता है।

राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था को देश की मिट्टी से जोड़ने वाला सन् 1885 ईसवी में एक ऐसा अप्रतिम व्यक्तित्व आविर्भूव हुआ जिसने न केवल ढंग से शिक्षा व्यवस्था के विषय में सोचा, अपितु विचारानुरूप उसे व्यवहार में भी लाया। श्री गिजुभाई जिनका पूरा नाम श्री गिरिजा शंकर बधेका है। भारत के शिक्षाकाश का उदित हुए ऐसे अल्पज्ञात शिक्षाविद् है जिनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों से देश की शिक्षा प्रणाली दिशा प्राप्त कर सकती है। इन्ही विचारों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शिक्षा दार्शनिक गिजुभाई के शिक्षा दर्शन का अध्ययन किया।

शोध कार्य के उद्देश्य

1. गिरजुभाई के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना।
2. गिरजुभाई के शिक्षा दर्श की पृष्ठभूमि का अध्ययन करना ।
3. गिजुभाई के बाल संसार के सन्दर्भ में माता–पिता की भूमिका के महत्व का अध्ययन करना।
4. गिरजुभाई के शिक्षा दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण सिद्धांत एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
5. गिरजुभाई के शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्धों और अनुशासन की संकल्पना के विषय में अध्ययन करना।

6. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में गिरजुभाई के शिक्षा दर्शन की सार्थकता का अध्ययन करना ।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु दार्शनिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष

गिजुभाई ने अपने विचरों को, शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों को और अपनी अनुभूतियों को अपनी अनेकानेक कृतियों द्वारा व्यक्त किया है। अपनी इस कृतियों में उन्होनें शिक्षा सम्बन्धी अपने सिद्धान्तोंक का जोरदार प्रतिपादन किया। उनके प्रमुख विचार अग्रांकित है–

गिरजुभाई के विचारों और कार्यो के अध्ययन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि बच्चों के चिंतन की अपनी ही दुनिया होती है, सोचने के अपने ही तरीके ही दुनिया होती है, सोचने के अपने ही तरीके होते है और सीखने की अपनी ही शैली होती है। इसे बच्चों के ज्ञान और विचार की संरचना कह सकते है। बालाकों के सीखने को सरल और आनन्तमय बनाने ज्ञान और विचार की संरचना को समझना आवश्यक है। इसे समझने के लिए बालकों के आन्तरिक विकास की जानकारी आवश्यक है। उनके शारीरिक विकास का ज्ञान आवश्यक है।

बालक ईश्वर का वरदान

गिरजुभाई कहते है कि बच्चों की प्रकृति में प्रकृति में परस्पर उतनी ही मित्रता पाई जाती है जितनी की खुद प्रकृति में विविधता। साथ ही प्रकृति की सार्वभौमिकता की तरह बच्चझै। के मूल स्वभाव में समानताएँ सभी होती है, परन्तु फिर भी किसी बच्चे को समझने के लिए कोई सूत्र गणित की तरह कार्य नहीं कर सकता। उसके सम्बन्ध में सहजता ही सम्भवतः सबसे बड़ा सूत्र है, जिसमें बाल प्रकृति की सामान्य समझ और बालकों की स्वभावगत विशिष्टता अन्तर्निहित है।

गिरजुभाई ने बालक के जन्म को, उसके धरती पर आगमन को भगवान का वरदान माना है। उनकी दृष्टि में बालक अलौकिक गुणों से आवेष्टिक होता है। उनकी यह मान्यता भारतीय मनीषा से प्रभावित है जिसमें सीमंतन संस्कार से ही अर्थात् उसके जन्म से पूर्व ही उसके स्वागत की तैयारियँा की आती है। वे मानते है कि बालक अपने आप में सम्पूर्ण होता है बस, जिस प्रकार का माली पेड़–पौधों की बड़ी जतन औरक लगन से सार–सम्भाल करता है, वैसी ही देख–भाल की जरूरत उसे अपने विकास के लिए होती है। बालक का जन्म परिवार में होता है इसलिए वे मानते है कि नए आए शिशु के शारीरिक, सांवेगिक और बौद्धक विकास के लिए उपयुक्त बातावरण का निर्माण करना माता–पित का दायित्व होता है। यहां वे स्पष्ट धारणा रखते है कि उसका कार्य केवल बालक की उसके अपने विकास में सहायता कराना भर है उसके बारे में उसकी आवश्यकता के बारे में सोचने–समझने का पूरा दायित्व ओढ कर उसके काम करना नहीं।

अभिभावकों का प्रशिक्षण

बाल विकास की सम्पूर्ण समझ विकसित होने के लिए वे माता–पिता के लिए अभिभावकत्व के प्रशिक्षण की आवश्यकता अनुभव करते है। अभिभावकत्वक प्रशिक्षण की आवश्यकता का अनुभव करने का कारण है नव माता–पिता के लिए बालक के स्वभावित

विकास की बाल–सुलभ चेष्टाओं का चिन्ता का कारण बन जाना। वे नव माता–पिता को समझाना चाहते हैं कि बालक का भी स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है और वे अपने ढंग से संसार को देखते–परखते है और स्वयं अपनी विश्वदृष्टि निर्मित करते है।

गिरजुभाई की दृष्टि मे माताएँ बालको के विकास की धुरी होती है उनकी सार–संभाल जितनी कुशलता से करती है, उनकी ही कुशलता से वे उनका शिक्षण भी कर सकती है। माताओं के साथ उन्होनें घर का समान कैसा होना चाहिए? बालक क्या करता है, उनकी स्वच्छता की सार–संभाल में क्या बाते ध्यान रखें यहाँ तक कि बालको की पोशक कैसी होनी चाहिए, इस पर भी चर्चा की है। माताएँ बच्चों को किस प्रकार स्वानुीझव से सीखने में मदद कर सकती है, उनके लिए विभिन्न प्रवृत्तियों की व्यवस्था कर सकती है, इस पर भी उन्होनें चर्चा की है। उनकी दृष्टि में माताओं को घर खेलने–कूदने, कागज और कैंची के काम, दियशसलाई की डिब्बियों, लकड़ी आदि से खिलौने बनाने, मिट्टी, रेत से घर बनाने की, चिड़िया के पर, फूल–पत्तियाँ संग्रह करने आदि की विभिन्न प्रवृत्तियों में बालकों की सहायता की सहायता करनी चाहिए। कुल मिलाकर कह सकते है कि बालकों की वस्तुओं तथा प्रकृति के संसर्ग में आने की स्वतन्त्रता अभिभावकों को देनी चाहिए, क्योंकि यह सब उसके विकास और अधिगम में सहायक होती है।

अभिभावकों व बालक के मध्य प्रेम सम्बन्ध

गिरजुभाई का स्पष्ट मत है कि यदि माता–पिता अर्थात अभिभावकों तथा बालकों के मध्य प्रेम सम्बन्ध होते है तो बालकों का विकास, उनकी उपलब्धियां अच्छी होती है। जिन परिवारों मे माता–पिता अपने बालक–बालिकाओं से बात करते है, उनके साथ खेलते है, उनको कहानियां सुनाते है, उनकों अपने साथ धुमाने ले जाते है, उनके व्यक्तित्व को आदर देते है, उनको परिवार के विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने का अवसर देते है, उनके प्रति स्नेह रखते है, उनकों समुचित स्वतन्त्रता देते है और उनको स्वाबलम्बी जीवन व्तीत करने की दिशा में मदद करते है, तो उन परिवारों में पलने वाले बालक तोड़–फोड़ हिंसा और विघटनकारी आसामाजिक प्रवृत्तियों में सक्रिय नहीं होते। माता–पिता के इस प्रेमल व्यवहार को उन्होने अमृत नाम दिया है। वे कहते है कि हमारी दृष्टि जैसी मीठी अथवा कड़वी होगी वैसे ही बालक होगें।

शिक्षा

गिरजुभाई की दृष्टि में शिक्षा जीवन व्यापी प्रक्रिया है और इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में तीन बड़े और गम्भीर प्रश्न–1, क्या पढाना 2. किस लिए पढाना 3. कैसे पढाना। यदि इस प्रश्नों क उत्तर खोज लिए जाए तो शिक्षा को उपयोगी और ठोस बनाया जा सकता है गिरजुभाई चाहते है कि शिक्षा से जुड़े किसी भी योजना में इन तीनों बातों का समान रूप से रखा जाना चाहिए और तीनों के बीच तालमेल से शिक्षा का बेहतर बनाया जाना चाहिए।

शिक्षा का सिद्धान्त

गिरजुभाई के शिक्षा के सिद्धान्त स्वतन्त्रता आत्मनिर्भरता, सृजन और स्वानुशासन की बुनियाद पर टिके हैं। गिरजुभाई की अपेक्षा है कि परम्परावादी त्रासद, बाल विरोधी अध्यापक केन्द्रिक शिक्षा के स्थान पर स्नेह और प्रेम पर आधारित नई शिक्षा का सूत्रपात किया जाए जिसमें केन्द्रीय स्थान बालक का हो।

शिक्षा के उद्देश्यक

गिरजुभाई की दृष्टि में शिक्षा द्वारा बालक की उन क्षमताओं का विकास होना चाहिए जो उसे स्वास्थ और सुखी जीवन जीने में सहायक कर सके। उनकी मान्यता है शिक्षा को एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना है जिसे अपने समाज, परिवेश और देश की समझ हो और जो समस्याओं के सुलझाने के लिए आवश्यक समझ, विश्लेषण क्षमता और निर्णय लेने का साहस रखता हो। बालकों की इन्द्रियों को विकसित करना अर्थात उन्हें अवलोकन की शिक्षा देना, उनकी मानसिक शक्तियों यथा बुद्धि शक्ति, तुलना शक्ति, निर्णय शक्ति को विकसित करना साथ उसे साहित्य–रसिक बनाना तथा उसकी भौगौलिक वस्तुओं में रूचि विकसित करना, ये शिक्षा के उद्देश्य होने चाहिए। गिजुभाई की दृष्टि में यही बालकों की आधारभूत शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि इसी पर विषय ज्ञान का भाव निर्मित होता है।

शिक्षक

गिजुभाई ने माता–पिता और अभिभावकों की भांति ही बाल विकास में शिक्षकों की भूमिका को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है। उनका मत है कि शिक्षकों का व्यवसाय, समाज–जीवन, समाजशास्त्र और समाज के भविष्य का निर्माण करने वाला व्यवसाय है। अतः शिक्षक उसे ही बनाना चाहिए जो शिक्षण कार्य को धार्मिक–आध्यात्मिक जीवन के साथ समान्वित कर सके। शिक्षक को शिक्षा को एक मिशन के रूप मं अपनाना चाहिए। उनका मत है कि जब तक शिक्षक का शिक्षा से अटूट प्रेम नहीं होगा तब वह नवनिर्माण नहीं कर सकेगा। श्रम और एकनिष्ठता ही शिक्षक के कार्य की सफलता का तंत्र है। शिक्षक में उत्साह उद्योग, त्याग भावना और व्यवसाय के प्रति गौरव की अनुभूति होना अत्यन्त आवश्यक है।

शिक्षक छात्र सम्बन्ध

गिजुभाई शिक्षक और छात्रों के पारस्परिक सम्बन्ध बुद्धि और स्वार्थ के स्थान पर ममत्व और प्यार का मानते है। जिसमें कोई ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी, छोटे–बड़े आदि की भावना नही होती। बस भावना होती है माँ और बच्चे जैसे प्रेम की।

पाठ्यक्रम

गिजुभाई पर माण्टेसरी पद्धति का पूर्ण प्रभाव है और उसी अनुरूप उनके पाठ्यक्रम में इन्द्रिय शिक्षण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि इस पद्धति में कोई भी विषय अलग–अलग नही पढाया जाता, सभी विषयों को समावाय हाता है यथापि इन्द्रिय शिक्षण के साथ भाषा शिक्षण, गणित, विज्ञान तथा काला–कौशल, चित्रकला, संगीत, चरखा कातना तथा अन्य जीवनोपयोगी विषय सम्मिलित रहते है।

शिक्षण पद्धति

गिजुभाई माण्टेसरी पद्धति के अनन्य प्रशंसक है। उन्होने माण्टेसरी पद्धति का इतना गुणगान किया है कि वे उसे ही शान्ति की कुंजी मानते है। माण्टेसरी पद्धति की रोचक प्रवृत्तियां और उसमें प्रयुक्त हाने वाले शिक्षण–उपकारणों, शिक्षण साधनों के माध्यम से बालक स्वयं को स्वयं ही शिक्षित करते रहते है उनकी मान्यता है कि माण्टेसरी पद्धति के स्वतन्त्र, स्वतः व निर्भय वातावरण में अनगिनत बालक सृजनात्मक प्रवृत्तियों में लीन हो जाते है। उनमें भय, अभाव, असुरक्षा आदि की भावना तिरोहित हो जाती है और आनन्द संतोष व सहयोग के स्थायी भाव बन जाते है। रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रप्त होने वाला आनन्द बालकों के मुखों पर, उनकों आवाज में, उनकी चाल में और मेल– मुलाकात में

स्पष्ट दृष्टिगत होता है। इन्हीं प्रवृत्तियों और संलग्नकता से उनकी भाषा की, गणित की और विज्ञान की शक्तियाँ धीरे–धीरे प्रस्फुटित होने लगती है।

1. मानव विकासशील प्राणी है। वह अपनी सारी क्रियाएँ विकास के लिए ही करता है।
2. विकास स्वतः स्फूर्त होता है। इसके अनुकूल वातावरण तो बनाया जा सकता है पर कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को विकसित नहीं कर सकता है।
3. प्रत्येक जीवंत प्राणी अपने स्वरूप को पूर्णता तक पहुँचाने के लिए विकास करता है।

विद्यालय

गिजुभाई की दृष्टि में विद्यालय बाल विकास की एक प्रयोगशाला होनी चाहिए जिसमें बालकों के विकास के अनुरूप सम्पूर्ण साधन सामग्री हो जिससे बालक स्वयं प्रयोग कर सके अनुभव प्राप्त कर सके। विद्यालय में दण्ड, परितोषिक आदि का अभाव होना चाहिए।

समय सारिणी

गिजुभाई सर्वप्रथम आवश्यक मानते है प्रार्थना के साथ संगीत का आयोजन आगे की गतिविधियों हेतु स्वस्थ, आनन्दमय वातावरण का निर्माण कर देता है। इससे उनका आत्मविश्वास भी बढता है और एकाग्रता भी। प्रार्थना में भारतीय परम्परा का अनुपालन उन्हें यथेष्ट है, अर्थात् जूते आदि उतार कर प्रार्थना करना। तत्पश्चात् बालक की रूचि पर आधारित कार्यक्रम होते है। बालक अपनी पसंद के उपकरणों पर कार्य करते है एवं स्वयं आसन लगा लेते है, आसन समेट देते है। नाश्ते पश्चात् प्लेटों आदि की साफ–सफाई, घूमना, झूलना आदि और फिर कला–कौशल का कार्य करते है। इस सम्पूर्ण समय सारिणी में बच्चे सूक्ष्म आवलोकन करके जिज्ञासु और कल्पनाशील बनते है। उनमें विनम्रता, सहयोग और आत्म–विश्वास का विकास होता है।

मूल्यांकन

मूल्यांकन पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग है। गिजुभाई मूल्यांकन हेतु अपनाई जाने वाली परीक्षा पद्धति के विरोधी है। उनका मानना है कि परीक्षा के स्थान पर अनौपचारिकक परिस्थितिजन्य साक्ष्यों का आधार मूल्यांकन के लिए उचित होता है जैसे बातचीत अवलोकन आदि।

अनुशासन

गिजुभाई बालकों को किसी भी प्रकार का दण्ड या सजा देने या डांट–डपट करने के प्रबल विरोधी है। उनके अनुसार मारना–पीटना या डराना–धमकाना किसी बात का इलाज नहीं है। इससे बालक में ऊपर से तो व्यवस्था दिखाई पड़ती है, परन्तु दबाई गई वृत्ति अन्दर ही अन्दर ज्यों की त्यों बनी रहती है और जब वह फूट कर निकलती है तो अत्यन्त उग्र रूप धारण कर लेती है। इसलिए वे बालक की बुरी वृत्ति को दबाने में नहीं अपितु उसे जड़ से दूर करने पर देते है। गिजुभाई बालको को उपदेश देना भी उचित नहीं मानते है। उपदेश देने के बदले बालक को काम करने के साधन देने, अच्छे संगति देने और अच्छा वातावरण देने की बात पर गिजुभाई बल देते है। उसका तक्र है कि जब तक हाथों में काम है, जब तक म में काम का चिन्तन है, जब तक सोहबत अच्छी है और जब तक वातावरण स्वच्छ और निर्मल है तब तक बालकक बुराइयों से सुरक्षित है।

गिजुभाई तो शिक्षा की उलख जगा गए और तदनुरूप बाल शिक्षा की निरन्तरता बनाऐं रखने का दायित्व हमें सौंप गए। अब आगे काम हमारा है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. गिजुभाई रचितक साहित्यः माण्टेसरी बाल शिक्षण समिति राजलदेसर शुरू राजस्थल।
2. पचौरी, गिरीशः शिक्षा और भारतीय विरासतः इण्टनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ।
3. पाठक, भरतलालः गिजुभाई का शिक्षा का शिक्षा मै योगदानः सुरजीत प्रकाशन बीकानेर।
4. सुखोम्लीन्सकी वसीलीः बाल हृदय की गहरायाँ पीपुलज पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली।
5. हाल्ट, जानः बच्चे बसफल कैसे होते हैः एकलव्य भोपाल म0प्र।